बुकर टी. वाशिंगटन

पचास सेंट का सपना

जबरी आसिम

चित्र : ब्रायन कोलियर

बुकर ने शब्दों से दोस्ती करने का सपना देखा. उसने किताबों में रहने वाले रहस्यों को मुक्त करने की बात सोची.

गुलामी में जन्मे, बुकर टी. वाशिंगटन ने केवल पढ़ना और लिखना सीखने का सपना देखा. मुक्ति के बाद, युवा बुकर ने कॉलेज की डिग्री प्राप्त करने के लिए पैदल चलकर पांच सौ मील की यात्रा शुरू की. वो हैम्पटन इंस्टिट्यूट तक पैदल चलकर गए. जब वे वहां पहुंचे, तो उनकी जेब में सिर्फ पचास सेंट थे और उनका एक बड़ा सपना सच होने वाला था. एक गुलाम जो कभी स्कूल के बाहर इंतजार करता था, वो एक दिन स्वतंत्र अश्वेतों का एक महान शिक्षक बना.

बुकर टी. वाशिंगटन

पचास सेंट का सपना

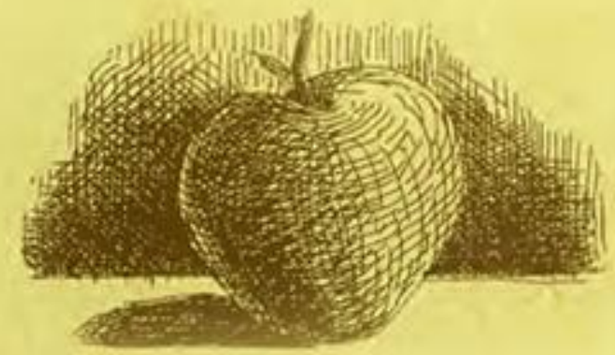

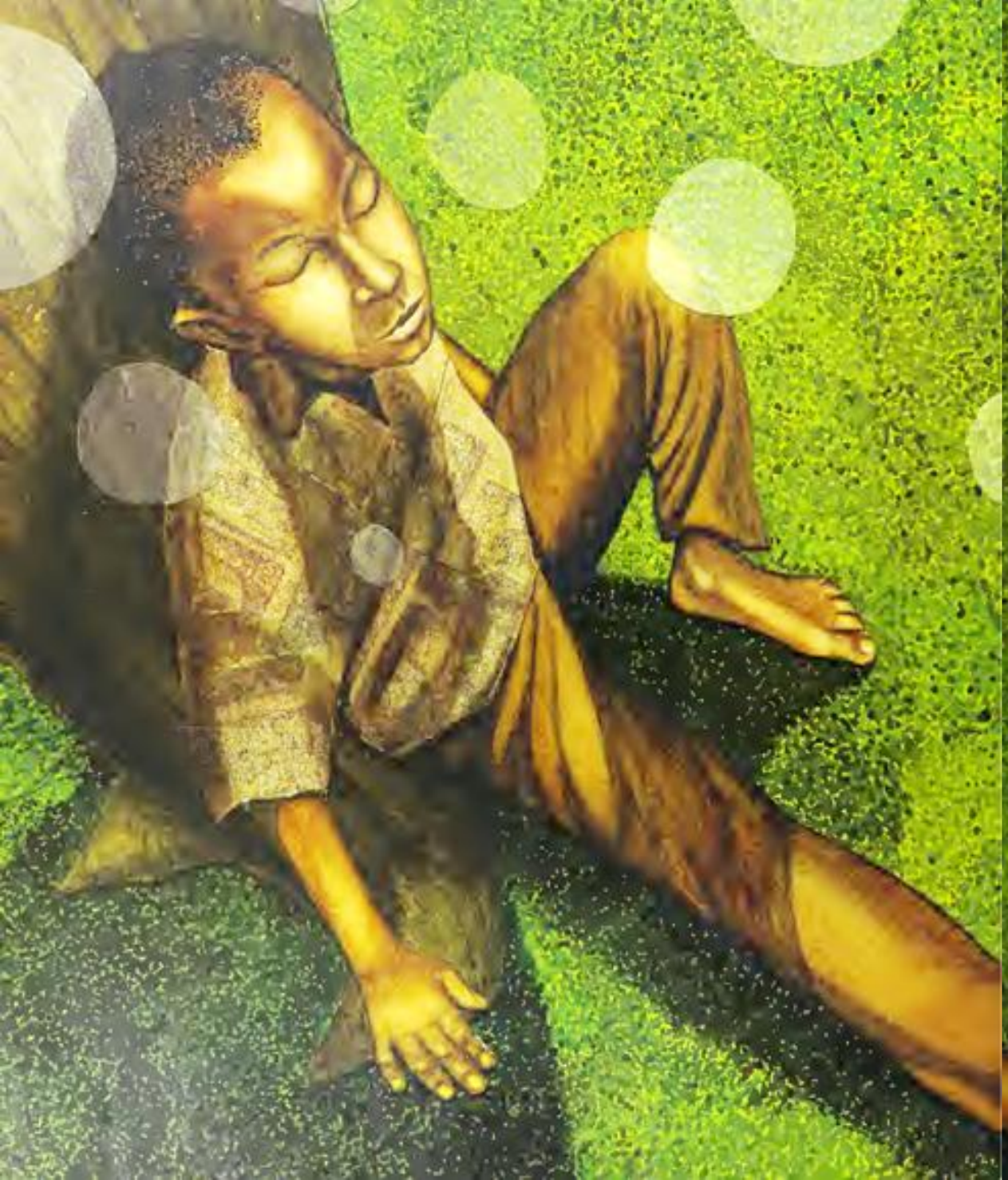

किसी भी लड़के की तरह,
बुकर भी खेलना, दौड़ना
और कूदना चाहता था
वो नीले आसमान और तेज धूप तले
ज़्यादा-से-ज़्यादा सीखना चाहता था.
बुकर ने सपना देखा
कि वो शब्दों से दोस्ती करेगा,
और किताबों में छिपे रहस्यों को
मुक्त करेगा!

कुछ अजीब काले निशान
पूरे कागज़ पर उछलते-कूदते
और नृत्य करते थे,
जिन्हें देखकर बुकर
हंसता और खुश होता था.
लेकिन क्योंकि वो गुलाम था
इसलिए उसे पढ़ने की अनुमति नहीं थी.
अगर किसी काले लड़के को किताब
के साथ पकड़ा जाता तो उसकी
जमकर धुनाई होती.

जब वो अपने मालिक की
बेटी को स्कूल छोड़ने जाता
तो वो उसकी किताबें उठाता था
तब वो अपनी उंगलियों से
प्रत्येक कवर को छूता था
वो किताबों के जादू को
अपने हाथों में रिसते हुए महसूस करता था.

कक्षा के अंदर, मालिक की लड़की
अपने सहपाठियों के साथ पढ़ती थी -
"A से एप्पल (सेब). B से बर्ड (चिड़िया)."
बुकर बाहर खड़ा रहता था
वर्जीनिया की तेज़ गर्मी में
नीले आसमान और
चिलचिलाती धूप के नीचे,
वो कक्षा की खिड़की में से अंदर घूरता था.
वो सुनता था और सपने देखता था.

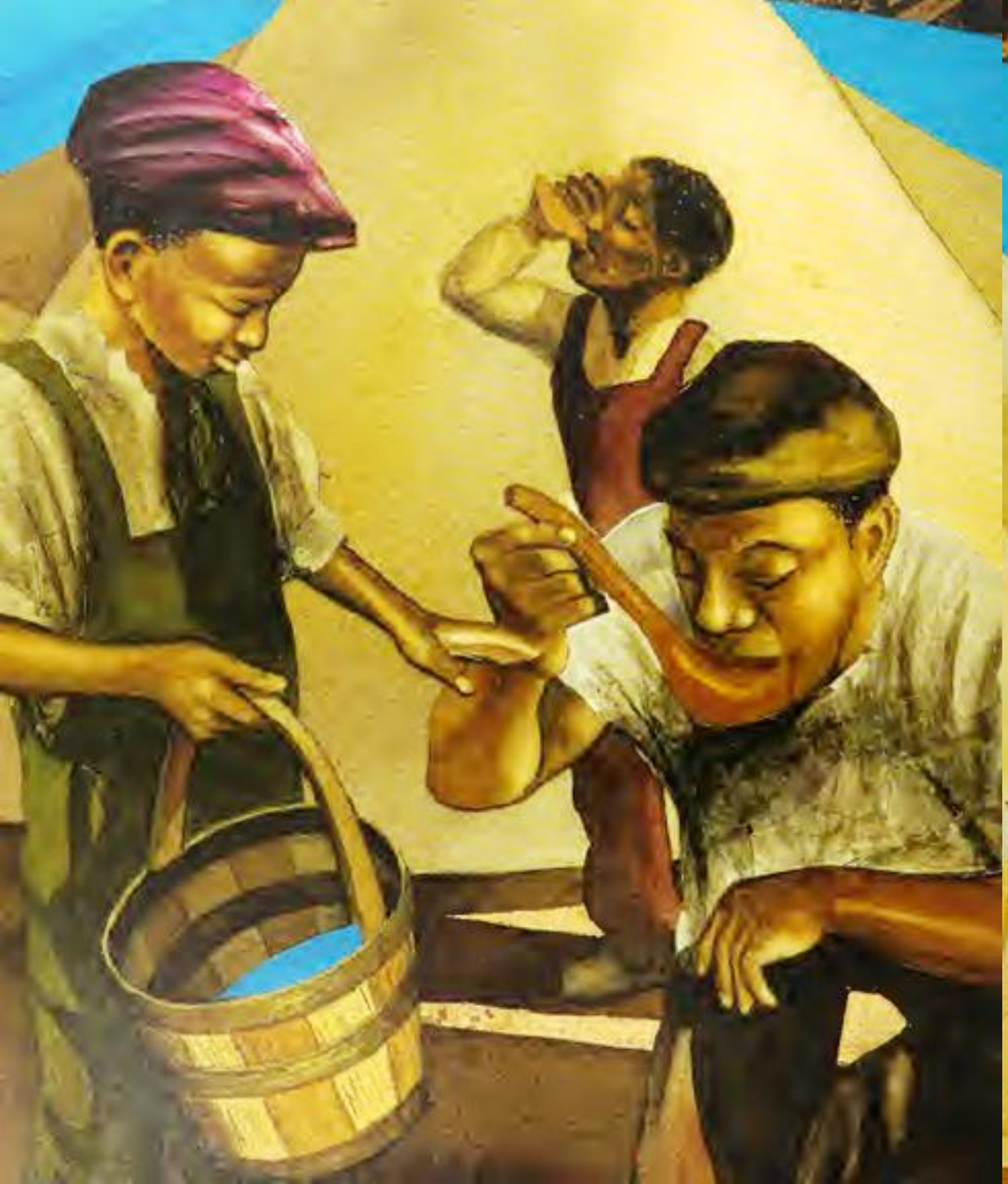

आज़ादी के बाद भी
उसका जीवन काफी कठिन था.
बुकर का परिवार वर्जीनिया से
वेस्ट वर्जीनिया चला गया.
वो और उसका भाई अपने सौतेले पिता
के साथ रहने चले गए
और उन्होंने नमक की भट्टी में
काम करना शुरू किया.
कान्हा घाटी में की गहराई में
वो फावड़ा चलता, नमक ढोता,
और पैक करता.

बाद में, माल्डेन की एक कोयला खदान में;
खनिकों और मशीनों ने,
पृथ्वी में हजारों फीट नीचे तक ड्रिल किया
कोयले तक पहुँचने के लिए.
वयस्कों के लिए भी वो एक
गर्म और खतरनाक काम था
और बुकर जैसे लड़कों के लिए
तो वो बेहद खतरनाक था.
ऐसा अंधेरा बुकर ने पहले
कभी नहीं देखा था.

एक दिन माँ ने उसे आश्चर्य में डाला.
वो बुकर के लिए वर्तनी की एक किताब लाईं.
बुकर अब ABC सीखने लगा
वो अब उन अजीब निशानों
से दोस्ती करने लगा
जो किताब के पूरे पन्ने पर नाच रहे थे.
जल्द ही वे अक्षर उसे समझ में आने लगे.
"A से एप्पल (सेब). B से बर्ड (चिड़िया)."
वो अंत में पढ़ने लगा.

जब ओहियो का एक नौजवान शहर आया,
तो उस अद्भुत अजनबी की खबर
एक केबिन से दूसरे केबिन तक,
बहुत तेजी से फैली.
वो एक काला आदमी था
जो पढ़ सकता था!
लोगों को काम करने के बाद
इकट्ठा होना पसंद था
और वे उसके मुंह से समाचार सुनते थे.
युवा बुकर ने भी सुना, और सपना देखा.

हर सुबह बुकर तड़के उठता
और फिर जल्दी से काम करने लगता.
वो फावड़ा चलाता, ढोता और
माल पैक करता.
उसके बाद को नीग्रो स्कूल में
दौड़कर पढ़ने जाता.
एक छोटे से भीड़ भरे कमरे में,
बुकर ने अपने पहले पाठ पढ़े.
"A से एप्पल (सेब). B से बर्ड (चिड़िया)."
बुकर ने सुना, सीखा और सपने देखे.
लेकिन वो उससे कहीं ज़्यादा चाहता था.

जब वो किशोर का
तब उसने एक
नायाब स्कूल के बारे में सुना था.
उस स्कूल का नाम था
हैम्पटन इंस्टिट्यूट.
नीग्रो वहाँ पढ़ाई कर सकते थे,
कृषि विज्ञान के साथ-साथ
वो वहां और कई चीज़ें सीख सकते थे.
वहां के छात्र वे सभी किताबें पढ़ सकते थे
जो वे पढ़ना चाहते थे.
बुकर ने सुना था और सपना देखा था.
हैम्पटन कहाँ था?
अभी उसे यह नहीं पता था,
या वो वहां तक कैसे पहुंचेगा.
वो सिर्फ इतना जानता था
कि उसे वहां ज़रूर पहुंचना था.

डेढ़ साल तक,
बुकर ने काम किया और पैसे बचाए,
हर समय वो स्कूल का ही सपना देखता था.
उसके पास अभी भी बहुत कम पैसे थे
और पहनने के लिए केवल
कुछ फटे कपड़े थे
उसके दोस्तों और परिवार के पास
भी बहुत कुछ नहीं था -.
कुछ सिक्के, कुछ डॉलर और एक रूमाल!
परन्तु जो कुछ उनके पास था
वो उन्होंने उसे दिया.
उसके बूढ़े पड़ोसियों ने
अपने अधिकांश दिन गुलामी में बिताए थे.
उन्होंने युवा बुकर से कहा
कि उन्होंने कभी कल्पना नहीं की थी
कि उनका अपना एक,
कभी किसी बोर्डिंग स्कूल में जाकर पढ़ेगा.
बुकर ने उनकी बातें सुनीं
और वो उन्हें भी अपने
सपनों के साथ ले गया.

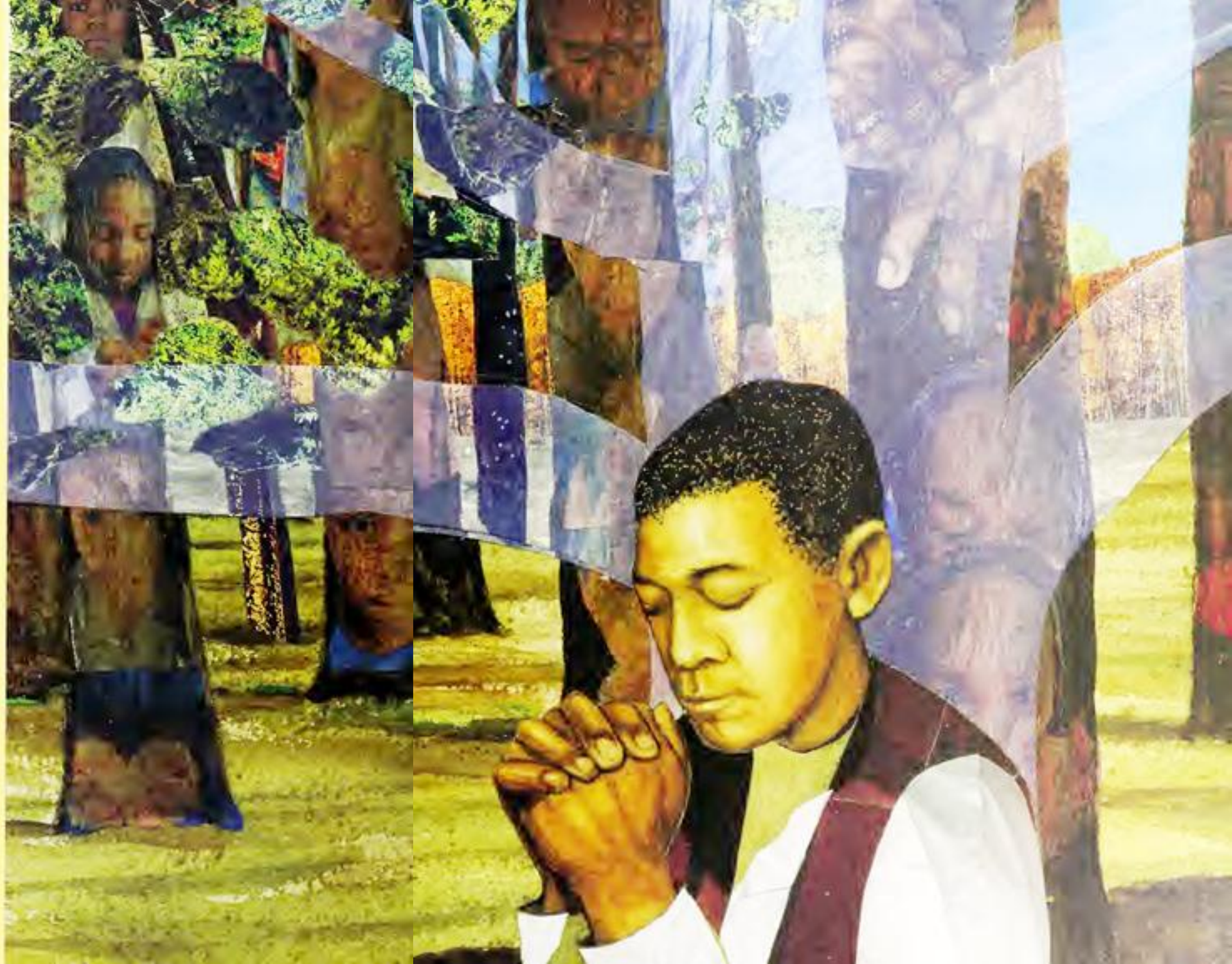

हैम्पटन इंस्टिट्यूट की
पाँच सौ मील की यात्रा
उसने पैदल ही तय की.
वो बहुत लम्बा सफर था
जिसमें उसे वर्जीनिया की पहाड़ियों
से गुज़रकर समुद्र तक पहुँचना था.
तेज़ हवा के झोंके
उसकी थकी हुई हड्डियों में चुभ रहे थे,
और कठोर भूमि से
उसके पैरों में दर्द हो रहा था.
फिर भी वो चलता ही रहा.

रिचमंड पहुंचते-पहुंचते
उसके सारे पैसे खत्म हो गए.
लेकिन हैम्पटन
अभी भी बयासी मील की दूरी था.
वो बहुत थका और भूखा था.
अब उसके लिए अगला कदम
उठाना भी मुश्किल था.
शहर बड़ा, डरावना
और परेशानी में डालने वाला था.
वहां इतनी सारी परछाइयाँ थीं,
और कोई मित्र नहीं था!

जेब खाली होने के बावजूद
बुकर सड़कों पर आधी रात
होने तक चलाता गया.
वो खाने की दुकानों को घूरता रहा
जहाँ तली चिकन के ऊंचे ढेर लगे थे
और मिठाइयों की महक फैली थी
उसके मुंह में पानी आया
उसका खाली पेट गड़गड़ाने लगा
एक भयंकर तूफ़ान की तरह.
क्या उसे वहां रोटी का एक टुकड़ा
या दूध की एक घूंट नहीं मिलेगी!
धूमिल आसमान के नीचे
कड़ाके की ठंड से वो हार मान सकता था.
तब उसने अपने ज़हन में
हैम्पटन में पुस्तकालय की कल्पना की,
जहाँ की रहस्यमय अलमारियां,
जादुई किताबों से भरी थीं.
फिर उसे अंदर से एक आवाज सुनाई दी
आवाज़ ने उससे चलते रहने का
आग्रह किया.
उसने आवाज़ सुनी, और सपना देखा.

उसे एक जहाज के माल को उतारने
का काम मिला
उसने नाश्ता खरीदने के लिए
पर्याप्त कमाई की.
मज़दूरों ने मिलकर
मेहनत के गीत गाए
उन्होंने माल बाँधा, उठाया,
और लोड किया.
उनकी आवाज़ों ने बुकर को याद दिलाई
नमक की खदान में बिताए अपने दिन,
उसे अपने दोस्तों
और परिवार की याद आई
जिन्हें वो बहुत पीछे छोड़ आया था.
उसने माल, उठाया और उसका ढेर बनाया.
उसकी पीठ में दर्द होने लगा
और उसके झीने कपड़े, पसीने से भीग गए.
दिन बीतते गए.
धीरे-धीरे, उसने इतने पैसे बचाए
जिससे वो यात्रा पूरी कर सके.

अंत में जब वो हैम्पटन पहुंचा,
तो वहां ईंट की बड़ी इमारत को देखकर
उसका अंतःकरण प्रकाश से भर गया.
उसकी जेब में अभी भी पचास सेंट बाकी थे
और उसकी आत्मा में एक सपना था.
हैम्पटन के जादू ने, बुकर का स्वागत किया.

स्कूल की एक साल की फीस
सत्तर डॉलर थी.
जो पचास सेंट से कहीं अधिक थी.
बुकर ने अपनी फीस चुकाई
एक चौकीदार का काम करके.
वो सुबह तड़के उठकर
कक्षा में जाने से पहले
झाड़ू लगाता, सफाई और
अन्य काम करता था.
फिर भी, उसकी कमाई पूरती नहीं थी.
लेकिन उसकी कड़ी मेहनत ने
दूसरों को प्रेरित किया.
अन्य लोगों ने उसकी मदद की.
फिर बुकर उनके सपनों को
भी अपने साथ ले चला.
इससे पहले उसने कभी भी
नियमित भोजन नहीं किया था
वो जीवन में कभी दो चादरों के बीच,
बिस्तर पर नहीं सोया था.
हैम्पटन के जीवन से बेहतर
वो और क्या मांग सकता था?

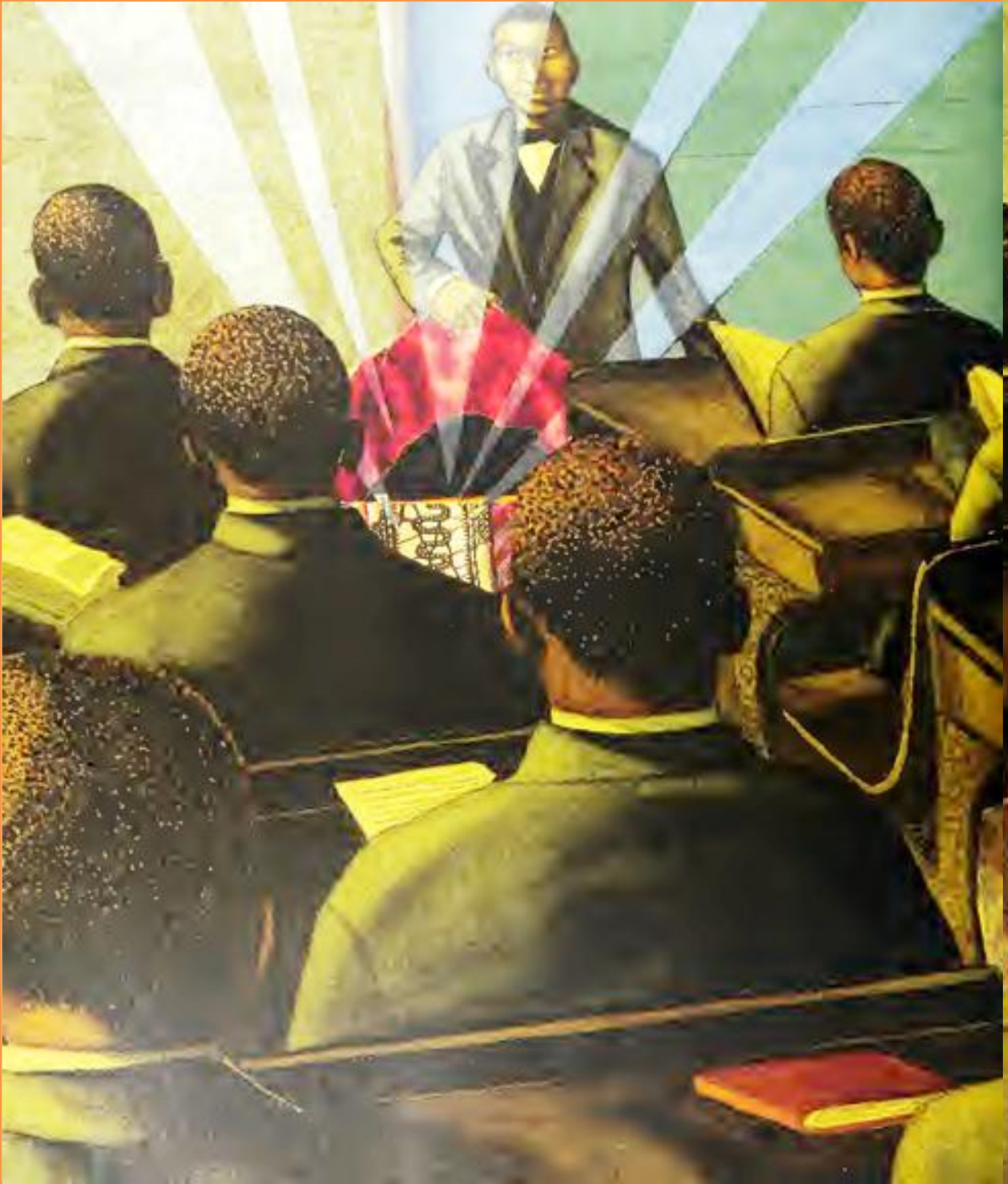

बुकर के लिए, उसके शिक्षक
सबसे बड़े चमत्कार थे.
वे चतुर और दयालु थे.
उन्होंने अपने छात्रों को
दूसरों के साथ अपने
ज्ञान को बांटना सिखाया.
हो सकता है कि उसमें
से कुछ छात्र बड़े होकर
खुद अपने स्कूल चलाएं?

बुकर ने एक लंबा सफर तय किया था
"A से एप्पल (सेब). B से बर्ड (चिड़िया)."
वहां से वो बहुत आगे बढ़ गया था.
पांच सौ मील चलने के बाद
उसका एक सपना सच हुआ.
लेकिन बुकर की यह यात्रा
बस एक शुरुआत थी.
अपनी मेज पर बैठे हुए,
किताबों के ढेर से घिरे हुए
वो सुनता था, और सपने देखता था.

बुकर टी. वाशिंगटन के बारे में

बुकर टी. वॉशिंगटन (1856 -1915) ने 1875 में हैम्पटन इंस्टिट्यूट से, सम्मान के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की. वो एक राष्ट्रीय नेता और अपने समय के सबसे प्रसिद्ध अफ्रीकी-अमेरिकियों में से एक बने. आज उन्हें टस्केगी इंस्टिट्यूट के संस्थापक के रूप में याद किया जाता है, जो अब एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय है. उनकी मृत्यु के समय, परिसर में सौ से अधिक भवन, पंद्रह सौ से अधिक छात्र और लगभग 2 मिलियन डॉलर फंड्स जमा थे. उन्होंने न केवल पढ़ना-लिखना सीखा, बल्कि खुद कई किताबें भी लिखीं. उनकी चौदह पुस्तकों में से सबसे प्रसिद्ध उनका संस्मरण "अप फ्रॉम स्लेवरी" है.

उनकी यात्रा के बारे में अतिरिक्त तथ्य

• वाशिंगटन के बचपन के दौरान, 1831 में, वर्जीनिया के कानून के अनुसार, गुलामों और मुक्त अश्वेतों को पढ़ाना-लिखाना कानून द्वारा दंडनीय था.

• वाशिंगटन ने अपने मालिक की बेटी की कक्षा में सुनी गई शिक्षा का सटीक वर्णन नहीं किया, लेकिन उन्होंने "द लिटिल वन्स लैडर" प्राइमर पुस्तिका से "A से एप्पल (सेब). B से बर्ड (चिड़िया)" के समान कुछ सुना होगा जो उस समय प्रचलन में थी. बाद में उनकी मां ने उन्हें जो किताब दी, वो थी "नोहा वेबस्टर - द अमेरिकन स्पेलिंग बुक", जिसे "ब्लू बैक स्पेलर" भी कहा जाता था.

• वेस्ट वर्जीनिया में नमक की भट्टी में, वाशिंगटन के सौतेले पिता के बैरल पर संख्या 18 अंकित थी. वो नंबर सौतेले पिता को दिया गया था. यह पहला नंबर था जिसे वाशिंगटन ने पहचानना सीखा.

• एक चौकीदार के रूप में वाशिंगटन का वेतन केवल उसके कमरे का भाड़ा और भोजन कवर करता था, जो कि दस डॉलर प्रति माह था. हैम्पटन इंस्टीट्यूट (प्रति वर्ष सत्तर डॉलर) की उसकी पूरी ट्यूशन का भुगतान न्यू बेडफोर्ड, मैसाचुसेट्स के मिस्टर एस. ग्रिफिट्स मॉर्गन ने किया. हैम्पटन इंस्टीट्यूट के संस्थापक और प्रमुख ब्रिगेडियर जनरल सैमुअल सी. आर्मस्ट्रांग ने वाशिंगटन को यह छात्रवृत्ति दिलवाने में मदद की.

टस्केगी विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गई जानकारी

1856- बुकर टी. वाशिंगटन, जेम्स बरोज़ नामक मालिक के तंबाकू फार्म पर, वर्जीनिया के पास एक गुलाम के रूप में पैदा हुआ था.

1861- गृहयुद्ध शुरू हुआ.

1865 - गृहयुद्ध समाप्त हुआ, और राज्यों ने औपचारिक रूप से दासता को समाप्त करते हुए तेरहवें संशोधन की पुष्टि की. फिर वाशिंगटन मुक्त हो गया.

1865-1871 - वाशिंगटन ने एक नमक भट्टी में काम शुरू किया, और बाद में कान्हा घाटी में वेस्ट वर्जीनिया के मेल्डेन में एक कोयले की खान में काम किया. वो पहली बार एक स्थानीय स्कूल में पढ़ने गया.

1872 - वाशिंगटन ने हैम्पटन संस्थान पहुँचने के लिए अपनी पांच सौ मील लंबी यात्रा शुरू की.

1875 - वाशिंगटन ने हैम्पटन संस्थान से सम्मान के साथ स्नातक की डिग्री हासिल की.

1875-1877 - वाशिंगटन ने मेल्डेन में उसी स्कूल में पढ़ाया जिसमें वो खुद पढ़ा था. उस वेतन से उसने हैम्पटन इंस्टिट्यूट में अपने भाई की ट्यूशन अदा की.

1879 -1881 - वाशिंगटन ने हैम्पटन इंस्टिट्यूट में पढ़ाया.

1881 - वाशिंगटन ने अलबामा के एक पुराने चर्च को टस्केगी इंस्टीट्यूट में परिवर्तित किया, जिसमें शुरू में तीस अफ्रीकी-अमेरिकी छात्र पढ़ने आए.

1882 - छात्रों ने खुद अपने हाथ से बनाई ईंटों से टस्केगी इंस्टिट्यूट के पहले भवन का निर्माण किया.

1895 - वाशिंगटन ने अटलांटा, जॉर्जिया में एक इंटरनेशनल एक्सपोज़िशन में भाषण दिया जिसमें उन्होंने श्वेत और अफ्रीकी अमेरिकी समुदायों के बीच सहयोग पर बल दिया. उनके भाषण को बाद में वाशिंगटन आलोचकों ने "अटलांटा-समझौते" का नाम दिया.

1896 - वाशिंगटन पहले अफ्रीकी-अमेरिकी थे जिन्हें हार्वर्ड विश्वविद्यालय ने मानद उपाधि प्रदान की.

1900 - वाशिंगटन की पहली आत्मकथा, "द स्टोरी ऑफ माई लाइफ एंड वर्क" प्रकाशित हुई. वाशिंगटन ने नेशनल नीग्रो बिजनेस लीग की भी स्थापना की.

1901 - वाशिंगटन की दूसरी आत्मकथा, "अप फ्रॉम स्लेवरी", प्रकाशित हुई और बेस्टसेलर बनी. उसी वर्ष वाशिंगटन ने व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट के साथ भोजन किया जिसके बाद एक विवाद उत्पन्न हुआ.

1915 - वाशिंगटन के टस्केगी, अलबामा में घर पर मृत्यु हो गई.

लेखक का नोट

कुछ साल पहले, जिस घर में मैं बड़ा हुआ, उस घर में एक कोठरी की सफाई करते समय, मुझे लंबे समय से खोई हुई पहेली (जिग-सॉ पहेली) मिली. जब मैं छोटा था तो मेरे माता-पिता ने मुझे क्रिसमस के लिए वो पहेली दी थी. पहेली पर बुकर टी. वाशिंगटन का एक काला-सफ़ेद चित्र था. मुझे याद है कि स्कूल की सर्दियों की छुट्टी के दौरान मैं इस पहेली से बहुत जूझा था. जब मेरी खिड़की के बाहर बर्फ गिरती थी, तो मैं हर टुकड़े को पलटकर देखता था. धीरे-धीरे, मैंने सब टुकड़ों को इकट्ठा किया और फिर वाशिंगटन की तस्वीर मेरी आँखों के सामने उभरी.

वो तस्वीर अब आसानी से इंटरनेट पर उपलब्ध है. आज उस तस्वीर को देखकर मुझे याद आता है कि जब मैंने उसे पहली बार देखा था तो मुझे कितना डर लगा था. वाशिंगटन, फोटो में अक्सर कठोर और गले में एक कसी टाई लगाए दिखाई देते थे. उनकी गोद में एक खुली किताब होती थी. मेरी युवा आंखों को वो एक कठोर स्कूल के प्रिंसिपल की तरह लगते थे - बुद्धिमान, मांग करने वाले, और किसी शरारती स्कूली लड़के की आत्मा को सीधे देखने में सक्षम.

जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, मुझे पता चला कि वाशिंगटन कोई साधारण हीरो नहीं थे. मैंने पाया कि वो एक जटिल, यहां तक कि विवादास्पद व्यक्ति थे. उनके नीग्रो उन्नति के विचार, अक्सर काले नेतृत्व के लिए उनके मुख्य प्रतिद्वंद्वी डब्ल्यू. ई. बी. डू बोइस के विचारों से टकराते थे. समय के साथ, वाशिंगटन को एक पथभ्रष्ट व्यक्ति के रूप में देखा जाने लगा, जिन्होंने टकराव की बजाए समझौता करना पसंद किया, "अटलांटा-समझौता" उसका एक उदाहरण था. 1960 के दशक तक, वाशिंगटन का नाम "गैर-सैद्धांतिक" समझौतों का पर्याय बन गया था. वाशिंगटन पोस्ट के आलोचक जोनाथन यार्डली ने लिखा. "अन्य महान अमेरिकियों की तुलना में बुकर टी. वाशिंगटन के साथ इतिहास ने अधिक क्रूर व्यवहार किया. उन्हें बदनाम किया गया और उनका मजाक उड़ाया गया, फिर भी किसी भी मापदंड से उनका जीवन असाधारण था."

हाल के वर्षों में, वाशिंगटन की प्रतिष्ठा का पुनर्मूल्यांकन किया गया है. रॉबर्ट नॉरेल की 2009 की वाशिंगटन की जीवनी, "अप फ्रॉम हिस्ट्री", वाशिंगटन को एक निडर, आशावादी के रूप में चित्रित करती है, जिन्होंने अपने लोगों के सर्वोत्तम हितों को ध्यान में रखते हुए लगातार अपने लक्ष्यों का पीछा किया. नॉरेल लिखते हैं कि 1890 के दशक तक "वाशिंगटन अमेरिका में सबसे प्रसिद्ध और सम्मानित अश्वेत व्यक्ति बन गए थे." 1856 में गुलाम पैदा होने के कुछ दशक बाद अपनी राष्ट्रीय प्रमुखता के कारण, 1901 में उन्होंने व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट के अतिथि के रूप में भोजन किया. टस्केगी की स्थापना के अलावा, देश भर में अथक व्याख्यान देने और कई किताबें लिखने के अलावा, वाशिंगटन ने नेशनल नेग्रो बिजनेस लीग की भी स्थापना की, जो एक वित्तीय-विकास संगठन था. 1915 में 59 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई.

जब मैंने इस पुस्तक को लिखना शुरू किया, तो मैं वाशिंगटन की राजनीति से कम चिंतित था. उनके द्वारा नस्लीय उत्थान के लिए कड़ी मेहनत, अनुशासन और आत्मनिर्भरता की वकालत में मेरी अधिक रुचि थी. मेरे लिए, आत्म-सुधार के लिए उनकी खोज का सबसे आकर्षक पहलू हैम्पटन इंस्टिट्यूट के लिए उनकी पांच सौ मील की यात्रा थी. नॉरेल के अनुसार, "एक गरीब युवा नीग्रो के लिए वो यात्रा तनाव और अनिश्चितता से भरी थी." वॉशिंगटन ने अपनी दूसरी आत्मकथा में लगभग चार पृष्ठों में उस घातक यात्रा का वर्णन किया. मेरा काम, साहस और दृढ़ संकल्प की उस कहानी का विस्तार करना था. गुलामी से ऊपर उठकर, मैंने वाशिंगटन की अतिरिक्त पहलुओं को भी विकसित किया, जिसमें उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान संभावित रूप से अनुभव की गई जगहों, ध्वनियों और संवेदनाओं पर ध्यान केंद्रित किया. वाशिंगटन के शब्दों में, जब वह अंततः हैम्पटन पहुंचे, तो उन्होंने संकल्प लिया कि "वो हार नहीं मानेंगे." मुझे आशा है कि यह छोटी पुस्तक पाठकों को इसी तरह के संकल्प लेने को प्रेरित करेगी.

—जबरी आसिम

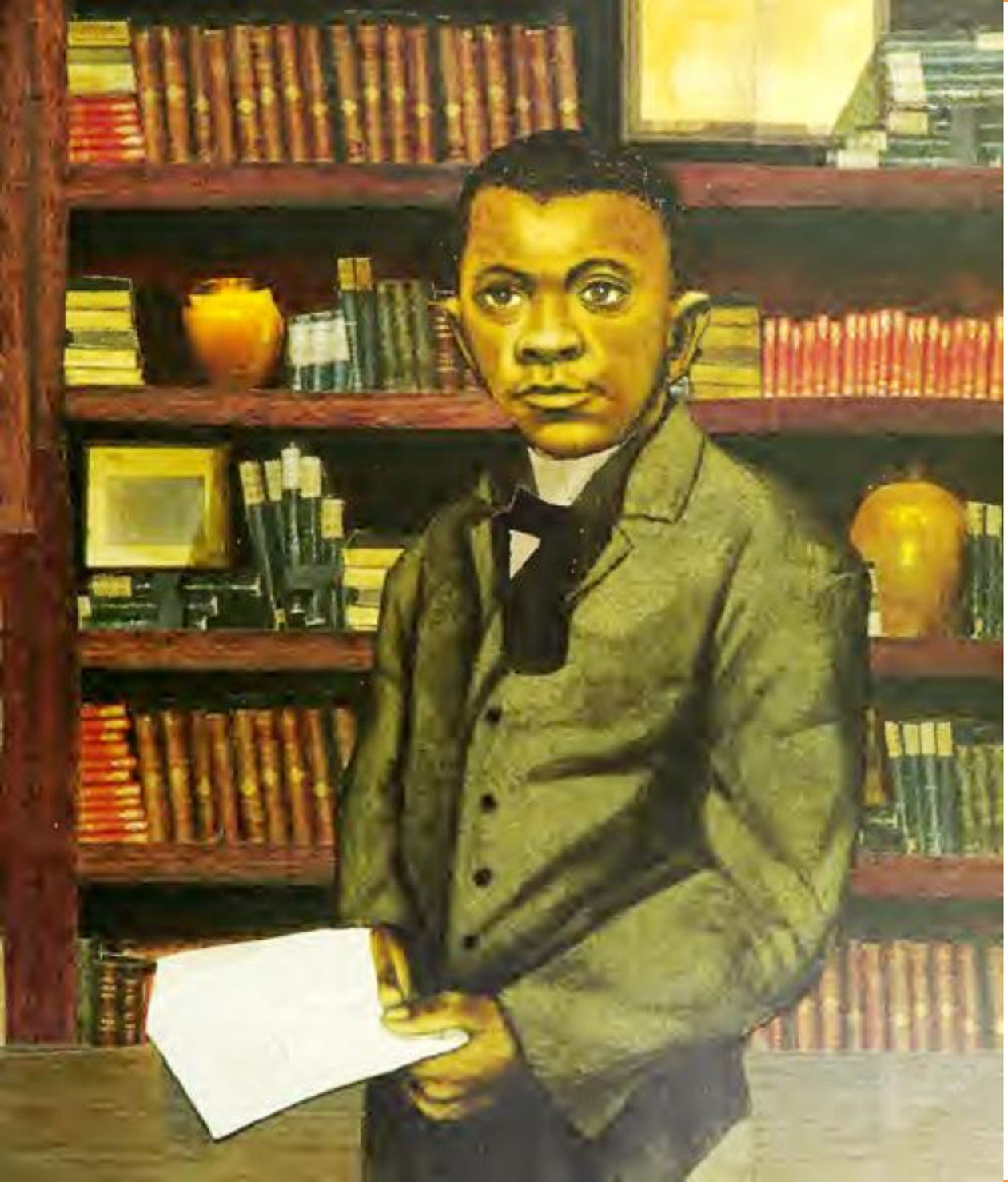

बुकर टी. वाशिंगटन